भारतीय विद्यालय, डारसेट

बिहारी के दोहे

प्रश्नोत्तर - कार्यपत्रिका

	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 वाक्यों में लिखिए।	
प्र. (1)	छाया भी कब छाया ढूँढने लगती है?	2
उ.	जेठ की दोपहरी में जब सूरज बिल्कुल सिर के ऊपर आ जाता है तो छायाएँ सिकुड़कर वस्तुओं के नीचे दुबक जाती हैं। छाया भी मानो छाया के लिए तरसने लगती है। इसलिए वह घने जंगलों को अपना घर बनाकर उसी में प्रवेश कर जाती है और दोपहर में बाहर नहीं निकलती।	
प्र. (2)	बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है - कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात। - स्पष्ट कीजिए।	2
उ.	बिहारी की नायिका को विश्वास है कि प्रेम दोनों ओर से है। जैसा प्रेम उसके मन में है, वैसा ही प्रेम प्रेमी के हृदय में भी है। इसलिए वह प्रेमी से कहती है कि वह अपने हृदय की धड़कनों से जान ले कि नायिका के मन में उसके प्रति इतनी ही चाह है।	
प्र. (3)	सच्चे मन में राम बसते हैं- दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।	2
उ.	बिहारी कहते हैं - राम अर्थात् प्रभु उन लोगों के मन में बसते हैं जिनकी भक्ति सच्ची होती है। जपमाला, छापा, तिलक आदि बाहरी दिखावा करनेवालों को कुछ प्राप्त नहीं होता।	
प्र. (4)	गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती है?	2
उ.	गोपियाँ बतरस की लालच में कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं। वे नटखट कृष्ण से प्रेम-भरी बातें करना चाहती हैं। इस उद्देश्य से वे जानबूझकर कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं, ताकि इसी बहाने वे उनसे बातें करें।	
प्र. (5)	बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी मन कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।	5
उ.	बिहारी ने बताया है कि सभी की उपस्थिति में भी मन की बात आँखों के इशारे से की जा सकती है। नायक ने सब सदस्यों के बीच में नायिका को आँखों से इशारा किया कि	

	चलें, प्रेम करें। नायिका ने इशारे से मना किया। नायक उसकी मना करने की अदा पर रीझ गया। नायिका नायक की रीझ देखकर खीज उठी। इसके बाद दोनों के नेत्र मिले। दोनों की आँखों में प्रेम की स्वीकृति का भाव था। स्वीकृति पाकर नायक प्रसन्न हो उठा। नायिका की आँखों में लज्जा आ गई।	
	भाव स्पष्ट कीजिए।	
प्र. (1)	मनौ नीलमनि सैल पर आतपु पर् यौ प्रभात।	2
उ.	कृष्ण के नीले शरीर पर पीले वस्त्र ऐसे सज रहे हैं मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकालीन धूप खिल उठी हो। यह संभावना और कल्पना रंग-रूप और चमक की समानता के कारण बहुत सुंदर बन पड़ी है।	
प्र. (2)	जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।	5
उ.	ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी ने जंगल को मानो तपोवन जैसा पवित्र बना दिया है। अब यहाँ हिंसा नहीं रही। आपसी सौहार्द और मित्रता का भाव सबमें पनप गया। शेर और हिरण, साँप और मोर जैसे कट्टर शत्रु भी समान रूप से बिना एक-दूसरे पर आक्रमण किए गर्मी सहन कर रहे हैं।	
प्र. (3)	जपमाला, छापै, तिलक सरै न एकौ कामु। मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।	
उ.	बिहारी कहते हैं- जप करने की माला हाथ में लेकर जप करने से, सारे शरीर पर चंदन का छाप लगाने से अथवा माथे पर तिलक लगाने से एक भी काम नहीं निकलता। आशय यह है कि यो सब बाहरी दिखावे हैं। इनसे प्रभु प्राप्ति नहीं हो सकती। केवल अधूरी भक्ति वाले अपरिपक्व लोग ही इन व्यर्थ के कर्मकांड़ों में लगे रहते हैं। जब कि ये व्यर्थ के नृत्य हैं। राम तो सच्ची भक्ति देखकर ही प्रसन्न होता है।	